Government Degree College, Madhuban, Pakridayal, East-Champaran
(B.R.A. B.U. Muzaffarpur)

B.A., Part - II, Hon./Sub.
Subject : Geography

Topic : संरचना (Structure)

By,
Dr. Md. Jamshed Alam
Assistant professor

Email ID : Jamshedmit@gmail.com
Whatsapp No. : 9097179092

संरचना
(Structure)

बिहार की भौगर्भिक संरचना का अध्ययन विभिन्न युगों में निर्मित चट्टानों के आधार पर किया जा सकता है। इसके अन्तर्गत प्राचीनतम भौगर्भिक काल में निर्मित भू-भाग से लेकर

नवीनतम भौगर्भिक काल में निर्मित भू-भाग तक सम्मिलित है। इसमें विस्तृत मैदानी भाग और संकीर्ण पर्वतीय तथा पठारी भाग का संरचनात्मक इतिहास बिल्कुल भिन्न है। बिहार का मैदानी भाग मध्य-कालीन अवसादी निक्षेप से निर्मित है और इसकी संरचना सरल है। यह एक आकृतिविहीन समतल मैदान है जिसका निर्माण गंगा और इसकी सहायक नदियों द्वारा लायी गयी मिट्टी से हुआ है। भौगर्भिक संरचना की दृष्टि से बिहार के मैदान का महत्व कम है, किन्तु यह कृषि और मानवाधिवास की दृष्टि से इस प्रदेश का सर्वप्रमुख विभाग है और यही मैदानी भाग पुरानी सभ्यता और संस्कृति का केन्द्र रहा है। इसके विपरीत, बिहार का संकीर्ण पठारी भाग प्रायद्वीपीय पठार का उत्तर-पूर्व निकला हुआ भू-भाग है जिसका संरचनात्मक सम्बन्ध प्राचीनतम भूखंड गोंडवानालैंड से है। इसकी भौगर्भिक संरचना अत्यन्त जटिल है और इसमें पुरानी और कठोर

चट्टानें पायी जाती हैं, जिनमें नीस तथा शिष्ट की प्रधानता है। प्रान्त के उत्तरी-पश्चिमी संकीर्ण क्षेत्र में स्थित सोमेश्वर पर्वतश्रेणी की संरचना इन दोनों से भिन्न है यह पर्वतश्रेणी बाह्य हिमालय या शिवालिक श्रेणी का ही एक भाग है, जिसका निर्माण तृतीय युग में हुआ था।

भौगर्भिक इतिहास के दृष्टिकोण से बिहार का दक्षिणी पठारी भाग सबसे पुराना है। इसका निर्माण प्री-कैम्ब्रियन युग में हुआ था और इसका मूल भू-पटल इसी प्राचीन युग की चट्टानों से निर्मित है। कालान्तर में इसपर दूसरे काल की चट्टानों का निक्षेपण हुआ है। नीस तथा ग्रेनाइट, धारवाड़ एवं विन्ध्यन क्रम की चट्टानें प्री-कैम्ब्रियनकाल से सम्बन्धित हैं। नीस तथा ग्रेनाइट और धारवाड़ युग की चट्टानें गया, नवादा, जमुई, मुंगेर इत्यादि में पायी जाती हैं। जबकि विन्ध्यन युग की चट्टानें रोहतास और

Date ______
Page ______

कैमूर में। विन्ध्यनकाल में कैमूर की पहाड़ी समुद्री निक्षेप से प्रभावित हुई जिसके कारण इस क्षेत्र में चूना-पत्थर मिलता है। विन्ध्यन-काल से जुरासिककाल तक बिहार का लगभग सम्पूर्ण भाग समुद्र की सतह से ऊपर रहा है। बिहार के उत्तरी-पश्चिमी भाग में स्थित रामनगर दून और सोमेश्वर श्रेणी बाह्य हिमालय या शिवालिक श्रेणी का हिस्सा है, जिसका निर्माण टर्शियरीकाल के अंत में हुआ था। यह बालू-पत्थर और कांग्लोमरेट से बना है। पहले इस स्थलखंड पर एक विशाल सागर था, जिसका नाम टेथिस सागर था। इस सागर में सदियों तक उत्तर और दक्षिण से नदियों के मलबों का निक्षेप किया। इसी सागर से टर्शियरीकाल में हिमालय का निर्माण हुआ। हिमालय पर्वत क्रमानुसार तीन बार ऊपर उठा है - इओसीन-ओलीगोसीन, मध्य मायोसीन और प्लीस्टोसीन काल में। तीसरे उभार के समय ही शिवालिक श्रेणी का निर्माण हुआ।

इसके बाद हिमालय के दक्षिण का भू-भाग नदियों के निक्षेप के कारण मैदान में परिवर्तित हो गया। बिहार का मैदान इसी मैदान का एक अंग है और यह निर्माण-काल की दृष्टि से बिहार का सबसे नया भूखंड है। यह उल्लेखनीय है कि गंगा के मैदान और कैमूर की पहाड़ी का धरातलीय भाग नीस और ग्रेनाइट से नहीं बना है, किन्तु इनका मूल भूपटल इन्हीं प्राचीन युग की चट्टानों से निर्मित है।

Next Class

(क) धारवाड़ चट्टानें
(ख) विन्ध्यन - समूह की चट्टानें

Md. Jamshed Alam